आज की साकार मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:09-12-14

इस संगमयुग पर हम बच्चों को याद की यात्रा सिखलाकर, हमारी आत्मा को दिव्य-गुणों और शक्तियों से भरपूर करने वाले, सर्वशक्तिमान बाप ने कहा, तुम्हें कोई कुछ छी-छी बोले तो सुना-अनसुना कर देना चाहिए. हियर नो ईविल.....ऊंच पद पाना है तो मान-अपमान, दुख-सुख, हार-जीत सब सहन जरूर करना है. जब तक अशरीरी नहीं बने हैं तब तक माया की कुछ न कुछ चोट लगती रहेगी.

इस ईश्वरीय पढ़ाई में सबसे मुख्य पढ़ाई है स्वयं की अशरीरी स्थिति बनाना. अशरीरी स्थिति बनाने के लिए ही बाबा हमें हर मुरली में दो बातों का ज्ञान देते है.

१. आत्मा-परमात्मा का ज्ञान २. सृष्टि चक्र के ड्रामा का ज्ञान.

बाबा हमें आत्मा-परमात्मा का ज्ञान इसलिए देते जिसे हम अपने को आत्मा समझ बाप को याद करें. बाबा हमें सृष्टि चक्र के ड्रामा का ज्ञान इसलिए देते है जिसे हम अपना स्वदर्शन-स्वचिंतन कर स्वपरिवर्तन करें, व्यर्थ संकल्पों और विकल्पों पर क़ाबू कर सके.

बाबा की आज की मुरली से आत्मा-परमात्मा पर कहे गये कुछ पॉइन्टस. इसे स्वयं को आत्मा समझ परमात्मा की याद में पढे.

- बाबा कहते है तुम यहॉ बैठे हो तो भी तुम्हारी बुद्धि में यही रहे कि हम बाबा के पास जायें. बाबा तो कभी किसको दुख नहीं देते. बाप आये है तुम्हारे लिए नई सुख की दुनिया, स्वर्ग की स्थापना करने.

- बाप कहते है बच्चों को यह तो बुद्धि में आता है कि हम आत्माये बहुत छोटी-छोटी बिंदी मुआफिक हैं. गायन भी है भृकुटी के बीच चमकता है अजब सितारा. अभी तुम समझते हो हम आत्माये चैतन्य है. एक छोटे सितारे मिसल हैं.

- बाप कहते है वही आत्मा अपने शरीर द्वारा अविनाशी पार्ट बजाती रहती है. इस शरीर को ही सब याद करते है. यह शरीर ही अच्छा-बुरा होने के कारण सबको आकर्षित करता है. अब बाप कहते है आत्म-अभिमानी बनो, अपने को आत्मा समझो.

- बाबा कहते है यह ज्ञान तुम्हें अभी ही मिलता है क्योंकि तुम जानते हो आत्मा ही पतित बनी हैं. खुद को आत्मा समझ बेहद के बाप को याद करने से ही आत्मा वापस पावन बनेगी.

- बाबा कहते है तुम्हें कभी भी यह ईश्वरीय पढ़ाई मिस नहीं करनी चाहिए. इसमें मुख्य है बाप की याद और दैवीगुण भी धारण करने हैं.

<u>बाबा की आज की मुरली से सृष्टि चक्र के ड्रामा पर कहे गये कुछ पॉइन्टस</u> -

- बाबा कहते है अभी रुहानी बच्चे यह तो जानते हैं कि नई दुनिया में सुख है, पुरानी दुनिया में दुख है. सुख की दुनिया में दुख का नाम-निशान नहीं फिर जहॉ दुख है वहॉ सुख का नाम-निशान नहीं. जहॉ पुण्य है वहॉ पाप का नाम-निशान नहीं, जहॉ पाप है वहॉ पुण्य का नाम-निशान नहीं. एक है सतयुग, दूसरा है कलियुग.

- बाबा कहते है यह तो बच्चों की बुद्धि में जरूर होगा कि अभी दुख का समय पूरा होता है और सतयुग के लिए तैयारी हो रही है. हम अभी इस पतित छी-छी दुनिया से उस पार सतयुग अर्थात रामराज्य में जा रहे हैं. नई दुनिया में है सुख, पुरानी दुनिया में है दुख.

- बाबा कहते है यह सारी दुनिया ही लंका है. यह दुनिया तो एक ही है जो नई से पुरानी, पुरानी से नई बनती है. पहले है स्थापना (नई दुनिया की और नई दुनिया में पार्ट बजाने वाले सोल्स की), फिर हे विनाश (पुरानी कलयुगी दुनिया का विनाश) और बाद में है ईश्वरीय पालना (जो सतयुग-त्रेता दो युग चलती है). बाद में होती है रावण की पालना (जो द्वापर-कलियुग दो युग चलती है).

- बाबा कहते है अभी तुम बच्चे समझते हो हम सो देवी-देवता चैतन्य में खुद बन रहे हैं. चैतन्य में होंगे तब पूजा आदि नहीं होगी. जब पत्थरबुद्धि बनते हैं तब पत्थर की पूजा करते हैं. चैतन्य हैं तो पूज्य हैं फिर पुजारी बन जाते हैं.

ॐ शांति.